चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक ट्रिब्यून........

दिनांक 31.12.2020 पृष्ठ संख्या........8........कॉलम........3-7........

चारे का उत्पादन भी है दस प्रतिशत अधिक

दूध उत्पादन बढ़ाएगी हकृवि की विकसित जई की दो किस्में

ओएस 405 व ओएस 424 की भारत के मध्य व पहाड़ी राज्यों के लिए की सिफारिश

कुमार मुकेश/हप्र

हिसार, 30 दिसंबर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने जई की एक साथ दो नई व उन्नत किस्में ओएस 405 व ओएस 424 विकसित की हैं। दोनों की खास बात यह है कि हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म कैंट व ओएस 6 की तुलना में इनका उत्पादन भी 10 प्रतिशत ज्यादा है और इनमें प्रोटिन की मात्रा भी ज्यादा है जिससे पशुओं में दूध उत्पादन भी बढ़ेगा। ये किस्में पत्ता झुलसा रोग के प्रति प्रतिरोधी भी हैं। अब तक हकृवि के वैज्ञानिक जई की नौ किस्में विकसित कर चुके हैं। इन किस्मों को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। जई की इन किस्मों में ओएस 405 की भारत के मध्य क्षेत्र मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य यूपी और ओएस 424 को पहाड़ी क्षेत्र जिसमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखंड के लिए सिफारिश की गई है।

जई की नयी उन्नत किस्मों की फाइल फोटो।

प्रति हेक्टेयर 514 क्विंटल चारा

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इस किस्म में हरे चारे की उपज 513.94 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व सूखे चारे की उपज 114.73 क्विंटल प्रति हेक्टेयर मिलती है। इससे लगभग 15.39 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार ओएस 424 किस्म में हरे चारे की पैदावार 296.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व सूखे चारे की पैदावार 65.1 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है। ओएस 424 किस्म से लगभग 13.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया।

हरियाणा के लिए भेजा जाएगा प्रपोजल

आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डीएस फोगाट ने बताया कि इन किस्मों को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग : इन किस्मों को विकसित करने में आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. डीएस फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आरएन अरोड़ा, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल की टीम ने काम किया। इसके अलावा डॉ. एलके मिढ़ा, डॉ. एसके गांधी, डॉ. आरएस श्योराण, डॉ. अनिल गुप्ता व डॉ. यूएन जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 31.12.2020...पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....1-4.....

खेतीबाड़ी • एचएयू के वैज्ञानिक प्रदेश के किसानों को कर रहे जागरूक

वैज्ञानिक विधि से कंपोस्ट खाद तैयार कर 50 हजार तक आमदनी पाएं किसान

महबूब अली | हिसार

किसान बाजार में मिलने वाले रासायनिक खाद के प्रयोग से बचें। घर पर ही वैज्ञानिक विधि से कंपोस्ट खाद तैयार कर आमदनी कमाएं। तैयार खाद को बेचकर भी हर माह 20 से 50 हजार रुपए तक की आमदनी की जा सकती है। एचएयू के वैज्ञानिक प्रदेश के किसानों को कंपोस्ट खाद तैयार करने के संबंध में जागरूक कर रहे हैं। ऑनलाइन माध्यम से भी उन्हें कंपोस्ट खाद तैयार करने के बारे में जानकारी दी जा रही है। एचएयू के कुलपति डॉ. समर सिंह ने ऑनलाइन माध्यम से किसानों को घर पर ही खाद तैयार करने के बारे में बताया। जल्द ही किसान विश्वविद्यालय में आकर भी किसान जानकारी हासिल कर सकेंगे। किसानों की आमदनी बढ़ाना ही विवि का मुख्य उद्देश्य है।

जानिए.. कंपोस्ट खाद तैयार करने की विधि

कंपोस्ट खाद तैयार करने के लिए हवादार और बिना हवादार विधि प्रयोग की जाती है। हवादार विधि से खाद एक ढेर के रूप में तथा बिना हवादार में खाद गड्ढों में तैयार की जाती है। ढेर के रूप में तैयार करने के लिए सड़ाने वाले जीवाणुओं को खुली हवा या ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। इसलिए इस विधि को एअरोबिक कहते हैं। इसके विपरीत गड्ढों में कंपोस्ट सड़ाने वाले जीवाणुओं को हवा या ऑक्सीजन की आवश्यता नहीं होती है। इसलिए इसे बिना हवादार या अनएअरोबिक कहते हैं। गड्ढों में तैयार खाद अच्छे गुणों वाली होती है।

इस तरह गड्ढे बनाकर तैयार करें कंपोस्ट खाद

हिसार | घर में तैयार की गई कंपोस्ट खाद को दिखाता किसान।

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के अनुसार कूड़ा-कचरा पशुओं के नीचे बिछावन मिला हुआ कचरा इकट्ठा करके पहले से तैयार गड्ढे के नीचे 7-10 सेमी मोटी तह बिछाते हैं। इस तरह ऊपर 4-5 सेमी मोटी गोबर की तह लगाते हैं। साथ में पशुओं का मलमूत्र भी इस पर डाल देते हैं। यह पानी की आवश्यकता को पूरी करता है। साथ ही कंपोस्ट खाद के गुणों में भी वृद्धि करता है। गोबर गैस संयंत्र से निकला हुआ गोबर मिले तो बहुत अच्छा है, क्योंकि उसमें पानी घुला हुआ होता है। इसी प्रकार तह पर तह लगाते जाते हैं, जब तक गड्ढा जमीन की सतह से 25-30 सेमी ऊपर तक न भर जाए। इसके बाद गड्ढों को ऊपर से गोबर व मिट्टी के मिश्रण से लिपाई कर देते हैं। इस लिपाई की तह 5 सेमी मोटी होनी चाहिए। यह खाद पांच माह में सड़कर तैयार हो जाती है। कुलपति का कहना है कि किसान घर पर ही खाद तैयार कर हर माह 20 से लेकर 50 हजार तक की कमाई भी उसे बेचकर कर सकते हैं।

क्या है कंपोस्ट खाद:

डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. जितेंद्र और डॉ. मुकेश कुमार के अनुसार कूड़ा कचरा, मिट्टी, राख, भूसा, बचा हुआ चारा, पौधों के डंठल, घास, सूखी सब्जियों के छिलके, गोभी की पत्ती, खरपतवार, जिनमें बीज न बना हो, जड़ें, गोशाला का चारा, पशुओं तथा मनुष्य के मलमूत्र को मिलाकर व सड़ा गलाकर तैयार किए खाद को कंपोस्ट खाद कहते हैं।

ऐसे करें जगह का चुनाव

ऐसी जगह का चुनाव करें जहां पर गड्ढा आसानी से खोदा जा सके, ऊंचा स्थान हो जहां वर्षा का पानी न भर सके, गोशाला के आसपास एवं घर के पीछे वाले हिस्से में, रास्त में न हो, जिससे यातायात में असुविधा हो, गड्ढा छाया में हो।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक ..31..12..2020..पृष्ठ संख्या.....5.....कॉलम.....3-4.....

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : डॉ. छाबड़ा

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा ने कहे।

वे विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा राष्ट्रीय खुंब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस वर्ष खुंब को रोग प्रतिरोधकता बूस्टर का विषय दिया गया। इस खुंब दिवस में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्यातिथि ने बताया कि खुंब पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुंब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है, बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटेशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी ऑक्सीडेंट्स जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते है जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। उन्होंने बताया कि दिल के रोगियों के लिए भी खुंब का सेवन लाभकारी है। खुंब में मौजूद लीन प्लांट प्रोटीन में न सिर्फ कैलोरी की मात्रा कम होती है, बल्कि फैट भी न के बराबर होता है। उन्होंने बताया कि खुंब में पाये जाने वाले फाइटोकेमिकल्स इसे एंटी बैक्टीरियल और एंटी फंगल बनाते हैं, जो व्यक्ति को मौसमी संक्रमण को बचाने और रोग प्रतिरोधकता को मजबूत बनाने में मदद करते हैं।

उत्पादन और मुनाफे के लिए सब्जियों की संरक्षित खेती जरूरी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना के सहयोग से वेबिनार किया गया था। संस्थान के सहनिदेशक डॉ. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुद का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि सब्जियां मानव आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो विभिन्न तरह के जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....हरि भूमि.....

दिनांक 31.12.2022...पृष्ठ संख्या.....9.....कॉलम.....2-3.....

हिसार। राष्ट्रीय खुंब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते मुख्य वक्ता डॉ. एके छाबड़ा व मौजूद अन्य। फोटो : हरिभूमि

कम लागत में अधिक मुनाफा देता मशरूम : डॉ. छाबड़ा

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा ने कहे। वे विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा राष्ट्रीय खुम्ब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस वर्ष खुम्ब को रोग प्रतिरोधकता बूस्टर का विषय दिया गया। इस खुम्ब दिवस में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्यातिथि ने बताया कि खुम्ब पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी आक्सीडेन्टस जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते है जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाँच बजे.....

दिनांक 30.12.2020....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

एचएयू में राष्ट्रीय खुंब दिवस आयोजित

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : डॉ. छाबड़ा

पांच बजे न्यूज

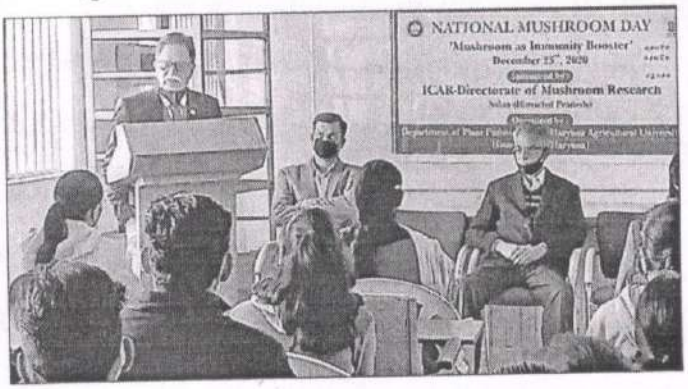

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा ने कहे। वे विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा राष्ट्रीय खुम्ब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस वर्ष खुम्ब को रोग प्रतिरोधकता बूस्टर का विषय दिया गया। इस खुम्ब दिवस में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्यातिथि ने बताया कि खुम्ब पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी आक्सीडेन्टस जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते है जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है इसलिये शाकाहारी लोगों के लिये प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। खुंब में विटामिन डी, कैल्शियम, पोटाशियम और फास्फोरस हड्डियों को कमजोर होने से रोक कर उन्हें मजबूत बनाते हैं। दिल के रोगियों के लिये भी खुम्ब का सेवन लाभकारी है। खुम्ब में मौजूद लीन प्लांट प्रोटीन में न सिर्फ कैलोरी की मात्रा कम होती है बल्कि फैट भी न के बराबर होता है। उन्होंने बताया कि खुम्ब में पाये जाने वाले फाइटोकेमिकल्स इसे एंटी बैक्टिरियल और एंटी फंगल बनाते है जो व्यक्ति को मौसमी संक्रमण को बचाने और रोग प्रतिरोधकता को मजबूत बनाने में मदद करते है। खुम्ब के सेवन से इसमें मौजूद फॉलिक एसिड और आयरन शरीर में हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है।

खुंब उत्पादन में प्रदेश अग्रणी : डॉ. अजीत राठी

पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. अजीत सिंह राठी ने बताया कि खुम्ब उत्पादन करके युवक/युवतियां स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। हरियाणा राज्य 20,000 मीट्रिक टन खुम्ब उत्पादन करके अग्रणी स्थान पर है। सफेद बटन खुम्ब के अलावा ढ़ींगरी खुम्ब, शिटाके खुम्ब, लायब्समैने खुम्ब, कॉर्डिसैप खुम्ब इत्यादि औषधीय खुम्बों का भी उत्पादन करें। डॉ. कुशल राज ने बताया कि खुम्ब के मूल्य सर्वर्धित उत्पाद जैसे अचार, बिस्कुट, पापड़, बढ़िया इत्यादि तैयार करके भी बाजार में बेचे जा सकते है, जिसकी बाजार में बहुत मांग है। खुम्ब दिवस के संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने कम लागत से खुम्ब उत्पादन की कई तकनीकों को लेकर चर्चा की। उन्होंने पराली को न जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए कम्पोस्ट बनाने में किए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इससे वातावरण दूषित नहीं होगा और मिट्टी में सूक्ष्म जीवी नष्ट नही होंगे। डॉ. राकेश चुघ ने औषधीय खुम्बों जैसे कार्डिसैप, शिटाके, लायनस मैने इत्यादि खुम्बों को उगाने की विधि पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. विनोद मलिक ने बताया कि भूमिहीन व्यक्ति भी खुंब का उत्पादन कर सकता है और मुनाफा कमा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........अजीत समाचार........

दिनांक 31.12.2020 पृष्ठ संख्या........—........कॉलम........—........

एचएयू में राष्ट्रीय खुंब दिवस आयोजित

कम लागत में अधिक मुनाफा देती मशरूम : डॉ. ए.के. छाबड़ा

हिसार/मंगाली नलवा, 30 दिसम्बर (राज पराशर/देवानन्द सोनी) : बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा ने कहे। वे विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा राष्ट्रीय खुम्ब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस वर्ष खुम्ब को रोग प्रतिरोधकता बूस्टर का विषय दिया गया। इस खुम्ब शिविर में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्यातिथि ने बताया कि खुम्ब पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉपर, पोटाशियम, फॉस्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी आक्सीडेन्टस जैसे पोषक तत्व प्रचुर

राष्ट्रीय खुंब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते मुख्य वक्ता डॉ. ए.के. छाबड़ा व मौजूद अन्य। (छाया : सोनी)

मात्रा में पाये जाते है जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है इसलिये शाकाहारी लोगों के लिये प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। खुंब में विटामिन डी, कैल्शियम, पोटाशियम और फास्फोरस हड्डियों को कमजोर होने से रोक कर उन्हें मजबूत बनाते हैं। दिल के रोगियों के लिये भी खुम्ब का सेवन लाभकारी है। खुम्ब में मौजूद लीन प्लांट प्रोटीन में न सिर्फ कैलोरी की मात्रा कम होती है बल्कि फैट भी न के बराबर होता है। उन्होंने बताया कि खुम्ब मे पाये जाने वाले फाइटोकेमिकल्स इसे एंटी बैक्टिरियल और एंटी फंगल बनाते है जो व्यक्ति को मौसमी संक्रमण को बचाने और रोग प्रतिरोधकता को मजबूत बनाने में मदद करते है। खुम्ब के सेवन से इसमें मौजूद फॉलिक एसिड और आयरन शरीर में हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है।

खुंब्र उत्पादन में प्रदेश अग्रणी : डॉ. अजीत राठी

पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. अजीत सिंह राठी ने बताया कि खुम्ब उत्पादन करके युवक/युवतियां स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। हरियाणा राज्य 20,000 मीट्रिक टन खुम्ब उत्पादन करके अग्रणी स्थान पर है। सफेद बटन खुम्ब के अलावा ढींगरी खुम्ब, शिटाके खुम्ब, लायनसमैने खुम्ब, कॉर्डिसेप खुम्ब इत्यादि औषधीय खुम्बों का भी उत्पादन करें। डॉ. राकेश चुघ ने औषधीय खुम्बों जैसे कार्डिसैप, शिटाके, लायनस मैने इत्यादि खुम्बों को उगाने की विधि पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. विनोद मलिक ने बताया कि भूमिहीन व्यक्ति भी खुम्ब का उत्पादन कर सकता [illegible] सकता है।

7/12

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 31.12.2020....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....1-5.....

'सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर वैबिनार आयोजित'

हिसार, 30 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर ऑनलाइन वैबिनार का आयोजन किया गया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से इस वैबिनार को आयोजित किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुद का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि बेहतर सब्जी उत्पादन और अच्छे मुनाफे के लिए संरक्षित खेती के द्वारा टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, खीरा, बेल वाली सब्जियों और गोभीवर्गीय सब्जियों की गुणवत्तापूर्ण नर्सरी और सब्जी उत्पादन किया जा सकता है। सब्जियों के लिए नर्सरी संरक्षित संरचना जैसे की पॉली हाऊस, नैट हाऊस, शैड नैट में प्रो-ट्रे के द्वारा विकसित की जा सकती है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस वैबिनार का आयोजन किया गया। वैबिनार का संचालन प्रशिक्षण समन्वयक डा. दविंदर सिंह, डा. अनिल कुमार रोहिल्ला और डा. निर्मल कुमार द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को जरूरी सामान व प्रमाण-पत्र वितरित करते वित्त नियंत्रक नवीन जैन व अन्य।

डा. सुरेंद्र सिंह ने सब्जी उत्पादन के लिए संरक्षित खेती के कार्यक्षेत्र और महत्व के बारे में विस्तार से बताया। डा. हरदीप सिंह ने किसानों को जांच के लिए मिट्टी और पानी के नमूने लेने का तरीका बताते हुए उसी अनुसार पॉली हाऊस में सब्जियां उगाने की सलाह दी। डा. संदीप कुमार ने प्रतिभागियों को संरक्षित खेती की विभिन संरचनाओं और योजनाओं से अवगत करवाया। डा. हंसराज रोहिला ने प्रो-ट्रे में सब्जी नर्सरी और डा. दविंदर सिंह ने संरक्षित संरचना के अंदर सब्जियों के उत्पादन के बारे में विस्तार से प्रतिभागियों को समझाया। डा. पवित्रा ने फंफूद और विषाणु से सब्जियों में होने वाली बीमारियों तथा डा. भूपेन्द्र सिंह ने कीटों द्वारा सब्जियों में होने वाले रोगों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत करवाया। इस प्रशिक्षण मे 25 किसान और 10 विद्यार्थी शामिल हुए।

फल व सब्जी परीरक्षण विषय पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न :

वित्तीय संस्थानों से जरूरी मदद लेकर बेरोजगार युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही बेरोजगारी को रोजगार में बदलकर अच्छे अवसर मुहैया करवा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के वित्त नियंत्रक नवीन जैन ने कहे। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया गया। प्रशिक्षण के संयोजक डा. सुरेंद्र सिंह ने प्रशिक्षण के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न सत्रों के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक भास्कर........

दिनांक 31.12.2020....पृष्ठ संख्या.......2.......कॉलम......3......

सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर वेबिनार

हिसार | एचएयू हिसार में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर ऑनलाइन वेबिनार किया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से वेबिनार किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुद का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि विकासशील देशों में सब्जी उत्पादन गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए एक आर्थिक अवसर प्रदान करता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अजीत समाचार.....

दिनांक 31.12.2020...पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

लघु उद्योग स्थापित करने हेतु आगे आएं युवा : जैन

प्रशिक्षण से हासिल ज्ञान को अधिक से अधिक फैलाएं

प्रतिभागियों को जरूरी सामान व प्रमाण-पत्र वितरित करते वित्त नियंत्रक नवीन जैन व अन्य। (छाया : सोनी)

हिसार/मंगाली खलवा, 30 दिसम्बर (राज पराशर/देवानन्द सोनी) : वित्तीय संस्थानों से जरूरी मदद लेकर बेरोजगार युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही बेरोजगारी को रोजगार में बदलकर अच्छे अवसर मुहैया करवा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के वित्त नियंत्रक नवीन जैन ने कहे। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के सावना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए जरूरी सामान मुहैया करवाया गया। मुख्यातिथि ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करके अपने परिवार का पालन-पोषण सकते हैं और दूसरों को भी रोजगार मुहैया करवा सकते हैं। उन्होंने आह्वान किया कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वे समूह बनाकर अपना व्यवसाय शुरू करें और उसे आगे बढ़ाएं। साथ ही प्रशिक्षण से अर्जित ज्ञान को अधिक से अधिक फैलाएं। इस प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने संस्थान में दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए संस्थान से जुड़ कर अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. सुरेंद्र सिंह ने प्रशिक्षण के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न सत्रों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान अचार मुरब्बा, केंडी, स्क्वैश, चटनी,जैम, टमाटर सोस, फल व सब्जियों को सुखाना जैसी छ प्रकार की जानकारी विस्तारपूर्वक दी गई। कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. डी.के. शर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रदेश की 30 अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रदान किया गया और समापन अवसर पर उन्हें प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पाँच बजे .....

दिनांक 30.12.2022 पृष्ठ संख्या..... — .....कॉलम..... — .....

एचएयू में फल व सब्जी परीरक्षण विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं युवा : नवीन जैन

पांच बजे ब्यूज

हिसार। वित्तीय संस्थानों से जरूरी मदद लेकर बेरोजगार युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही बेरोजगारी को रोजगार में बदलकर अच्छे अवसर मुहैया करवा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के वित्त नियंत्रक नवीन जैन ने कहे। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए जरूरी सामान मुहैया करवाया गया। मुख्यातिथि ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करके अपने परिवार का पालन-पोषण सकते हैं और दूसरों को भी रोजगार मुहैया करवा सकते हैं। उन्होंने आह्वान किया कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वे समूह बनाकर अपना व्यवसाय शुरू करें और उसे आगे बढ़ाएं। साथ ही प्रशिक्षण से अर्जित ज्ञान को अधिक से अधिक फैलाएं।

इस प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने संस्थान में दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए संस्थान से जुड़कर अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. सुरेंद्र सिंह ने प्रशिक्षण के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न सत्रों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान अचार मुरब्बा, कैंडी, स्क्वैश, चटनी, जैम, टमाटर सोस, फल व सब्जियों को सुखाना जैसी हर प्रकार की जानकारी विस्तारपूर्वक दी गई।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. डी.के. शर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रदान किया गया और समापन अवसर पर उन्हें प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......सिटी पल्स.......

दिनांक ..30..12..22..पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

एचएयू में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर वेबिनार आयोजित

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से इस वेबिनार को आयोजित किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुद का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि सब्जियां मानव आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो विभिन्न तरह के जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती हैं। विकासशील देशों में सब्जी उत्पादन गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए एक आर्थिक अवसर प्रदान करता है। बेहतर सब्जी उत्पादन और अच्छे मुनाफे के लिए संरक्षित खेती के द्वारा टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, खीरा, बेल वाली सब्जियों और गोभीवर्गीय सब्जियों की गुणवत्तापूर्ण नर्सरी और सब्जी उत्पादन किया जा सकता है। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. दविंदर सिंह, डॉ. अनिल कुमार रोहिला और डॉ. निर्मल कुमार द्वारा किया गया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने सब्जी उत्पादन के लिए संरक्षित खेती के कार्यक्षेत्र और महत्व के बारे में बताया। डॉ. हरदीप सिंह ने किसानों को जांच के लिए मिट्टी और पानी के नमूने लेने का तरीका बताते हुए उसी अनुसार पॉली हाउस में सब्जियां उगाने की सलाह दी। इस प्रशिक्षण मे 25 किसान और 10 विद्यार्थी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....नभ छोर....

दिनांक 30.12.2020 पृष्ठ संख्या.....—..... कॉलम.....—.....

युवा लघु उद्योग स्थापित करें : जैन

हिसार/30 दिसंबर/रिपोर्टर

वित्तीय संस्थानों से जरूरी मदद लेकर बेरोजगार युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही बेरोजगारी को रोजगार में बदलकर अच्छे अवसर मुहैया करवा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वित्त नियंत्रक नवीन जैन ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए जरूरी सामान मुहैया करवाया गया। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा की देखरेख में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने संस्थान में दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी दी। संयोजक डॉ. सुरेंद्र सिंह ने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान अचार मुरब्बा, कैंडी, स्क्वैश, चटनी, जैम, टमाटर सॉस, फल व सब्जियों को सुखाना जैसी जानकारी दी गई। कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. डीके शर्मा ने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रदेश की 30 अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रदान किया गया और समापन अवसर पर उन्हें प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....सिटी पल्स....

दिनांक 30.12.2020 पृष्ठ संख्या.....—..... कॉलम.....—.....

लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं युवाः नवीन जैन

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित फल व सब्जी परीरक्षण विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। वित्तीय संस्थानों से जरूरी मदद लेकर बेरोजगार युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही बेरोजगारी को रोजगार में बदलकर औरों को अवसर मुहैया करवा सकती हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के वित्त नियंत्रक नवीन जैन ने कहे। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण

हिसार। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते वित्त नियंत्रक नवीन जैन व अन्य।

शिविर के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया गया। मुख्यातिथि ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करके अपने परिवार का पालन-पोषण सकते हैं और दूसरों को भी रोजगार मुहैया करवा सकते हैं। उन्होंने आह्वान किया कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वे समूह बनाकर अपना व्यवसाय शुरू करें और उसे आगे बढ़ाएं। साथ ही प्रशिक्षण से अर्जित ज्ञान को अधिक से अधिक फैलाएं। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ.अशोक गोदारा ने संस्थान में दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी देते हुए संस्थान से जुड़कर अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। इस प्रशिक्षण के दौरान अचार मुरब्बा, कैंडी, स्कवैश, चटनी,जैम, टमाटर सोस, फल व सब्जियों को सुखाना जैसी हर प्रकार की जानकारी दी गई।

उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रदेश की 30 अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रदान किया गया और समापन अवसर पर उन्हें प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम...........................नभ छोर...........................

दिनांक 30/12/22 ...पृष्ठ संख्या.........–.........कॉलम.........–.........

सब्जियां जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती हैं : गोदारा

हिसार/30 दिसंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से वैबिनार का आयोजन किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि सब्जियां मानव आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो विभिन्न तरह के जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती हैं। विकासशील देशों में सब्जी उत्पादन गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए एक आर्थिक अवसर प्रदान करता है। बेहतर सब्जी उत्पादन और अच्छे मुनाफे के लिए संरक्षित खेती के द्वारा टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, खीरा, बेल वाली सब्जियों और गोभीवर्गीय सब्जियों की गुणवत्तापूर्ण नर्सरी और सब्जी उत्पादन किया जा सकता है। वैबिनार का संचालन प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. दविंदर सिंह, डॉ. अनिल कुमार रोहिला और डॉ. निर्मल कुमार द्वारा किया गया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने सब्जी उत्पादन के लिए संरक्षित खेती के कार्यक्षेत्र और महत्व के बारे में बताया। डॉ. हरदीप सिंह ने किसानों को जांच के लिए मिट्टी और पानी के नमूने लेने का तरीका बताते हुए उसी अनुसार पॉली हाऊस में सब्जियां उगाने की सलाह दी। डॉ. संदीप कुमार ने प्रतिभागियों को संरक्षित खेती की विभिन संरचनाओं और योजनाओं से अवगत करवाया। डॉ. हंसराज रोहिला ने प्रो ट्रे में सब्जी नर्सरी और डॉ. दविंदर सिंह ने संरक्षित संरचना के अंदर सब्जियों के उत्पादन के बारे में समझाया। डॉ. पवित्रा ने फफूंद और विषाणु से सब्जियों में होने वाली बिमारियों तथा डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने कीटों द्वारा सब्जियों में होने वाले रोगों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत करवाया। उन्होंने किसानों को कीटों व बिमारियों की रोकथाम के लिए रसायनों के सूझबूझ से प्रयोग करने की सलाह दी। डॉ. निर्मल कुमार ने किसानों को सब्जियों के मूल्य संवर्धन व उसके लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण मे 25 किसान और 10 विद्यार्थी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......................जगमार्ग.......................

दिनांक 31.12.2020...पृष्ठ संख्या......—......कॉलम......—......

ऑनलाइन वेबिनार में बताए सब्जियों की संरक्षित खेती से आय बढ़ाने के तरीके

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से इस वेबिनार को आयोजित किया गया। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुद का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि सब्जियां मानव आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो विभिन्न तरह के जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती हैं। विकासशील देशों में सब्जी उत्पादन गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए एक आर्थिक अवसर प्रदान करता है। बेहतर सब्जी उत्पादन और अच्छे मुनाफे के लिए संरक्षित खेती के द्वारा टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, खीरा, बेल वाली सब्जियों और गोभीवर्गीय सब्जियों की गुणवत्तापूर्ण नर्सरी और सब्जी उत्पादन किया जा सकता है। सब्जियों के लिए नर्सरी संरक्षित.संरचना जैसे की पोली हाउस, नेट हाउस, शेड नेट में प्रो-ट्रे के द्वारा विकसित की जा सकती है। इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का संचालन प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. दविंदर सिंह, डॉ. अनिल कुमार रोहिला और डॉ. निर्मल कुमार द्वारा किया गया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने सब्जी उत्पादन के लिए संरक्षित खेती के कार्यक्षेत्र और महत्व के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. हरदीप सिंह ने किसानों को जांच के लिए मिट्टी और पानी के नमूने लेने का तरीका बताते हुए उसी अनुसार पॉली हाउस मे सब्जिया उगाने की सलाह दी। डॉ. संदीप कुमार ने प्रतिभागियों को संरक्षित खेती की विभिन संरचनाओं और योजनाओं से अवगत करवाया। डॉ. हंसराज रोहिला ने प्रो ट्रे मे सब्जी नर्सरी और डॉ. दविंदर सिंह ने संरक्षित संरचना के अंदर सब्जियों के उत्पादन के बारे में विस्तार से प्रतिभागियों को समझाया। डॉ. पवित्रा ने फंफूद और विषाणु से सब्जियों में होने वाली बिमारियों तथा डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने कीटो द्वारा सब्जियों में होने वाले रोगो के बारे मे प्रतिभागियो को अवगत करवाया। उन्होंने किसानो को कीटों व बिमारियों की रोकथाम के लिए रसायनो के सूझबुझ से प्रयोग करने की सलाह दी। डॉ. निर्मल कुमार ने किसानो को सब्जियो के मुल्य संवर्धन व उसके लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण मे 25 किसान और 10 विद्यार्थी शामिल हुए।